B-4
L-7

ETHICS

मानकीय नीतिशास्त्र →

इसमें नैतिक नियमों, सिद्धांतों, मानकों या मानदंडों की स्थापना होती है और इनके आधार पर मानव के ऐच्छिक कर्मों को उचित या अनुचित के रूप में निर्धारित किया जाता है।

इसका उद्देश्य मानव जीवन का मार्गदर्शन करते हुए व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित में सामंजस्य स्थापित करना है ताकि सुखद मानवीय जीवन की स्थापना हो सके।

मानकीय नीतिशास्त्र को 3 भागों में बाँटकर देखा जाता है-

i) परिणामवादी नीतिशास्त्र - जब मानव के क्रियाकलापों का निर्धारण उस कर्म से उत्पन्न परिणाम के आधार पर किया जाए तो फिर उसे परिणामवादी नीतिशास्त्र कहा जाता है। सुखवाद, उपयोगितावाद, Pragmatism

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

आदि परिणामवादी नैतिक सिद्धांत हैं।

ii) परिणाम निरपेक्ष नीतिशास्त्र / निस्प्रयोजनवाद (Deontological Morality) –

जब किसी कर्म के उचित या अनुचित होने का निर्धारण परिणाम के आधार पर न होकर अंतस्थ नियमों या मूल्यों के आधार पर किया जाता है तो फिर उसे परिणामनिरपेक्ष नीतिशास्त्र कहा जाता है। कांट इसके प्रबल समर्थक हैं, कांट इस संदर्भ में 'कर्तव्य, कर्तव्य के लिए का समर्थन करते हैं'। आशय है कि हमें अपने कर्तव्य को कर्तव्य समझकर संपादन करना चाहिए क्योंकि फल या परिणाम से कर्म का औचित्य निर्धारित नहीं होता।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

iii) सद्गुण नीतिशास्त्र (Virtue Ethics)→

इसके अनुसार सद्गुणी व्यक्ति जो कर्म करता है और निर्णय लेता है वह उचित होता है, इस रूप में यह कर्म की बजाय कर्ता के चरित्र को नैतिकता का निर्धारक मानता है।

सुकरात, प्लेटो, अरस्तू तीनों इसके समर्थक हैं।

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics)→

इसमें तात्कालिक महत्व की व्यवहारिक समस्या का नैतिक समाधान ढूँढने का प्रयास किया जाता है, इसमें व्यक्ति को नैतिक रूप से जागृत कर मानवीय कर्मों से उत्पन्न ज्वलंत मुद्दों एवं समस्याओं पर नैतिक सोच को विकसित किया जाता है, इससे व्यक्ति में नैतिक चेतना का विकास होता है।

KGS IAS

नीतिशास्त्र

↓

मानवीय क्रियाकलाप

- उचित
- अनुचित
  - → आतंकवाद
  - → ग्लोबल वार्मिंग
  - → शरणार्थी समस्या
  - → विस्थापन
  - → प्रदूषण
  - → युद्ध
  - → गंदगी
  - → क्लीनिकल ट्रायल
  - → भ्रूण हत्या

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

आधि नीतिशास्त्र →

यह नीतिशास्त्र की नवीन शाखा है इसका मुख्य उद्देश्य आदर्शों या मानकों की स्थापना करना नहीं है बल्कि नैतिक निर्णयों

और नैतिक सम्पृत्यों के अर्थ एवं स्वरूप को स्पष्ट करना जैसे - शुभ, उचित आदि का आशय क्या है। यहाँ नैतिक निर्णयों को संज्ञानात्मक, असंज्ञानात्मक आदि रूपों में वर्णित किया जाता है।

निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र :-

→ निजी संबंधों में नीतिशास्त्र
→ सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र
→ निजी - सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र

निजी संबंधों में नीतिशास्त्र →

① निजी संबंध क्या है?
② निजी संबंधों में नैतिक मूल्य क्या है।
③ निजी संबंधों में नैतिकता के पतन के कारण क्या है।
④ निजी संबंधों में नैतिकता को बढ़ावा देने

के उपाय।

मानव एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में नाना प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन करता है, जैसे- माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-पुत्री, डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासक, नेता, दुकानदार आदि। इन भूमिकाओं में उसके कार्य, व्यवहार एवं उत्तरदायित्व अलग-अलग होते हैं, इन्हीं संदर्भों में नीतिशास्त्र की भूमिका उभरकर सामने आती है कि आखिर निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता को कैसे बढ़ाया जाए।

निजी संबंध क्या है?

व्यक्ति का अपने परिवार के सदस्यों, सगे संबंधियों, मित्रों आदि के साथ संबंध निजी संबंधों के दायरे में आता है। निजी संबंधों

में निकटता, घनिष्ठता, संवेगात्मक लगाव, परस्पर प्रेम, सहयोग, सच्चाई, प्रतिबद्धता, निजता का सम्मान आदि के तत्व होते हैं। ऐसे संबंधों में संबंधित पक्षों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे दूसरों की निजता का सम्मान करेंगे और उसे सार्वजनिक नहीं करेंगे। दूसरों से भी अपेक्षा की जाती है कि वे लोगों के निजी संबंधों में दखल न दें परंतु जब निजी संबंधों में मानवीय मूल्यों का हनन हो रहा हो, हिंसा व शोषण को बढ़ावा मिल रहा हो तो वहाँ बाहरी हस्तक्षेप को उचित माना जाएगा, जैसे- घरेलू हिंसा निवारण अधिनियम, वृद्ध माता-पिता भरण-पोषण अधिनियम।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

निजी संबंधों में नैतिकता के पतन के कारण →

- स्वार्थवादी, सुखवादी प्रवृत्ति में वृद्धि।

- पारिवारिक मूल्यों जैसे प्रेम, सहयोग, सम्मान, त्याग आदि का भाव।
- अर्थ और काम जीवन का चरम लक्ष्य।
- संबंधों का निर्धारण लाभ और हानि के आधार पर।

निजी संबंधों में नैतिकता को बढ़ावा देने के उपाय →

- बचपन में ही बच्चों के मन, मस्तिष्क में मूल्यों का बीजारोपण।
- सकारात्मक समाजीकरण की प्रक्रिया।
- स्कूलों में नैतिक शिक्षा की व्यवस्था।
- नैतिकता के इस स्वर्णिम सूत्र का पालन कि 'हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम दूसरों से स्वयं के प्रति अपेक्षा करते हैं'।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR